



Social

**INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH –  
GRANTHAALAYAH**  
A knowledge Repository



**भारतीय मानसून: वर्तमान के संदर्भ में**  
**INDIAN MONSOON: IN THE CONTEXT OF CURRENT**



**Chandra kanta Sharma \*1**

\*1 Assistant Professor (Geography), Department of Humanities & Social Science, Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur, Rajasthan, India

**सारांश (Abstract)**

भारत में मानसून उन ग्रीष्मकालीन हवाओं को कहते हैं जो दक्षिण एशिया में जून से सितंबर तक सक्रिय रहती हैं। ये हवाएं हिन्दमहासागर, बंगाल की खाड़ी और अरबसागर से भारतीय उपमहाद्वीप की ओर प्रवाहित होती हैं। इनकी दिशा दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-उत्तर की ओर होती है अतः मानसूनी हवाओं को दक्षिण-पश्चिम मानसूनी हवाओं के नाम से भी जाना जाता है। दक्षिण-पश्चिम मानसून देश में कुल वर्षा का 70% भाग प्रदान करता है। लेकिन इस वर्ष देश में औसत से कम वर्षा दर्ज की गई है संपूर्ण देश में 5.2% की कमी रही। देश के उत्तर – पश्चिम क्षेत्र में सबसे अधिक 10 फीसद की कमी दर्ज की गई। जून और जुलाई में अच्छे वर्षा के बाद अगस्त और सितंबर के दौरान देश में मानसून कमजोर रहा।

**मुख्य शब्द (Keywords):** मानसून, दक्षिण-पश्चिम हवाएं, परिध्रुवीय भंवर, जेट स्ट्रीम, एल-निनो (El-Nino), वायुदाब, सौर्यिक ऊर्जा

**Cite This Article:** Chandra kanta Sharma. (2017). "INDIAN MONSOON: IN THE CONTEXT OF CURRENT." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 5(12), 318-321. <https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v5.i12.2017.508>.

**परिचय (Introduction)**

भारतीय मानसूनी हवाओं की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कई मत प्रचलित हैं। आधुनिक विचारधारा के अनुसार मानसून हवाओं के विकास में परिध्रुवीय भंवर, हिमालय और तिब्बत पठार और जेट स्ट्रीम का महत्वपूर्ण योगदान है। इस विचारधारा के अनुसार 22 मार्च से सूर्य उत्तरायण होने लगता है। जिससे उत्तरी गोलार्ध के तापमान में वृद्धि होने लगती है और उत्तरी ध्रुवीय उच्च वायुदाब कम होने लगता है। इसका प्रभाव उच्चतलीय वायुमण्डलीय परिध्रुवीय भंवर पर भी पड़ता है। इस समय दक्षिण गोलार्ध में शीतकाल होता है। यह सार्वभौमिक सत्य है कि मानसून हवाओं की उत्पत्ति स्थल और जल के तापमान में अंतर के कारण होती है।

21 जून को सूर्य कर्क रेखा पर सीधा चमकने लगता है परिणामस्वरूप सर्वाधिक सौर्यिक ऊर्जा मिलने लगती है। कर्क रेखा भारत के लगभग बीच से गुजरने के कारण इस समय अत्यधिक तापमान के कारण उत्तरी भारत में न्यून वायुदाब केंद्र बन जाता है इसके विपरीत दक्षिणी गोलार्ध में शीतकाल के कारण दक्षिण हिंद महासागर और उत्तरी-पश्चिमी आस्ट्रेलिया के पास उच्च वायुदाब केंद्र का विकास होता है। परिणामस्वरूप उच्च वायुदाब वाले क्षेत्रों से अर्थात् महासागरीय भागों से निम्न वायुदाब वाले स्थलीय भागों की ओर हवाएं चलने लगती हैं। सागरीय भागों के ऊपर से चलने के कारण ये हवाएं आर्द्रता ग्रहण कर लेती हैं और जब ये भारतीय स्थल भाग के ऊपर से गुजरती हैं तो तीव्र वर्षा प्रदान करती हैं। इसे मानसूनी वर्षा कहते हैं। लेकिन जिस वर्ष दक्षिण प्रशांत महासागर गरम रहता है, उस वर्ष मानसून कमजोर रहता है। जब दक्षिण प्रशांत महासागर पर स्थित उच्च वायुदाब क्षेत्र से हवाएं इंडोनेशिया की ओर चलती हैं तो भारतीय मानसून की स्थिति प्रबल रहती है। इसके विपरीत स्थिति देश में सूखे को जन्म देती हैं, विद्वानों ने इस स्थिति का प्रमुख कारण एल-निनो को बताया है।

मानसून को नियन्त्रित करने वाले 16 पैरामीटरों में से एल-निनो भी एक प्रमुख पैरामीटर हैं। एल-निनो दक्षिण-पूर्वी प्रशांत महासागर की एक गर्म जल धारा है। जो पेरू तट के समांतर क्रिसमस के समय प्रवाहित होती हैं। एल-निनो के आगमन से दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तटीय शुष्क क्षेत्रों में भारी वर्षा होती है। लेकिन यह स्थिति भारत के दक्षिण पश्चिम मानसून को कमजोर कर देती है। यह गरम जल धारा हिन्दमहासागर के जल का तापमान बढ़ा देती है और उच्च वायुदाब की स्थिति को कमजोर कर देती है, जिससे भारत की ओर आने वाली दक्षिण पश्चिम मानसून हवाएँ कमजोर पड़ जाती है और वर्षा की संभावना कम हो जाती है। भारतीय मानसून पर यह धारा चार से पांच वर्षों में एक बार प्रभाव डालती है। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय मानसून की उत्पत्ति में स्थल और जल के तापमान में विभिन्नता एक महत्वपूर्ण कारक हैं।

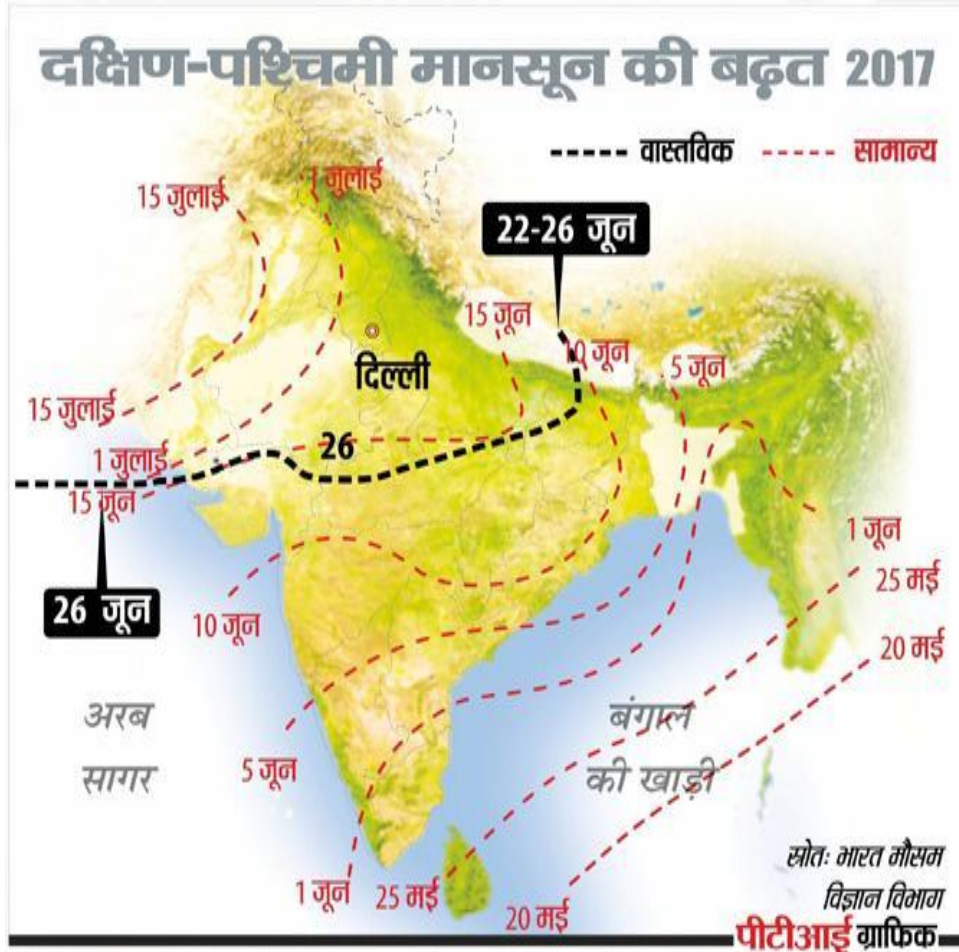
## भारतीय मानसून: 2017

चार माह लम्बा मानसून सीजन सामान्य से कम बारिश के साथ आधिकारिक तौर पर 30 सितंबर को समाप्त हो गया है। इस वर्ष देश में औसत से 5.2% कमी दर्ज की गई अर्थात् 95% वर्षा दर्ज करें की गई। लगभग 15 राज्यों और कुछ केन्द्र शासित प्रदेशों में औसत से कम वर्षा हुई है। इस प्रकार देश के हर तीसरे जिले में इस साल कम वर्षा हुई है। इसका प्रभाव फसलों पर भी देखा गया है 1 जून से 30 सितंबर के बीच कुल 841.3 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई। यह 887.5 मिलीमीटर की सामान्य वर्षा से 5 फीसद कम है।

मानसून विभाग अप्रैल मध्य में मानसून को लेकर दीर्घावधि पूर्वानुमान जारी करता है। इसके बाद फिर से मध्यम अवधि और लघु अवधि के पूर्वानुमान जारी किए जाते हैं। मौसम पूर्वानुमान के लिए काम करने वाली भारत की निजी क्षेत्र की सबसे बड़ी कंपनी स्काइमेट ने अपने पूर्वानुमान में 5% एरर मार्जिन भी रखा था। भारत की सरकारी एजेंसी आईएमडी ने अपने पूर्वानुमान संशोधन में 96% से बढ़ाकर 98% कर दिया।

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, विदर्भ और उसके आसपास के इलाकों में मानसून की स्थिति अधिक खराब रही है। इन क्षेत्रों में मानसून की कमी आखिरी चरण में (सितंबर में) अधिक देखी गई।

- जून महीने में भारत में मानसून अच्छा रहा 104% बारिश रिकॉर्ड की गई। उत्तर - पश्चिम भारत में इस समय सबसे व्यापक वर्षा दर्ज की गई।



जुलाई में भी मानसून ने अच्छे बारिश की और सामान्य से अधिक 102% वर्षा दर्ज की गई। जुलाई - अगस्त में देश के कई राज्यों जैसे गुजरात, दक्षिण राजस्थान, मुम्बई, असम, बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्रों और ओडिशा में भारी बारिश के कारण बाढ़ का प्रभाव रहा है लेकिन बाद में मानसून की अक्षय रेखा (एक्सिस आफ मानसून ट्रफ) (AMT) के हिमालय के तराई क्षेत्रों में जाना के बाद से सितंबर के पहले सप्ताह में देश के ज्यादातर हिस्सों में मानसून कमजोर रहा और बहुत कम वर्षा हुई। सितंबर के तीसरे सप्ताह में बारिश फिर से बढ़ी लेकिन दक्षिण भारत में ही सीमित रही, मध्य भारत और पूर्वी भारत में मानसून कमजोर रहा जिससे सम्पूर्ण देश के औसत वर्षा के आंकड़ों में गिरावट आयी। इस तरह जून और जुलाई में मानसून प्रबल रहा इस समय 2.5 प्रतिशत अधिक वर्षा दर्ज की गई लेकिन अगस्त और सितंबर में अपेक्षाकृत मानसून कमजोर रहा और लगभग 12.5 फीसद की कमी दर्ज की गई। उत्तर प्रदेश में 26 और राजस्थान में ढाई प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। राजस्थान के 831 में से लगभग 292 बाँध सूखे रह गए 1 जून से 30 सितंबर की मानसून अवधि में राजस्थान में 530.08 मिमी वर्षा होनी चाहिए थी परन्तु इस वर्ष 516.73 मिमी बारिश ही हो पाई है 1 जून से 30 सितंबर की मानसून अवधि में राजस्थान में 530.08 मिमी बारिश होनी चाहिए लेकिन इस साल 516.73 मिमी बारिश ही हो पाई है। इस वर्ष राजस्थान के लगभग 3 जिलों में

असामान्य, 6 जिलों में सामान्य से अधिक, 10 जिलों में सामान्य और 14 जिलों में सामान्य से कम बारिश रिकॉर्ड की गई है उत्तर प्रदेश में 839.7 मिमी होनी चाहिए थी लेकिन 26% की कमी के साथ 602.1 मिमी बारिश हुई। भारत में अधिकांश वर्षा मानसून काल में ही होती है। संपूर्ण भारत के लिए औसत वर्षा की मात्रा 117 सेंटीमीटर है। वर्षा की दृष्टि से भारत में विविधता पाई जाती है। चेरापुंजी में साल में 1100 सेंटीमीटर वर्षा होती है, तो जैसलमेर में केवल 20 सेंटीमीटर। मानसून काल भारत के किसी भी भाग के लिए निरंतर वर्षा का समय नहीं होता। कुछ दिनों तक वर्षा निर्बाध रूप से रहती है, जिसके बाद कई दिनों तक सूखा रहता है। वर्षा का आरंभ भी पूरे भारत में एक साथ नहीं होता बहुत बड़े क्षेत्र में बहुत देरी से होता है। कई बार बारिश समय से पहले ही समाप्त हो जाती है या देश के किसी हिस्से में अन्य हिस्सों से अधिक वर्षा हो जाती है और कई हिस्सों में सूखा रह जाता है।

वर्षा के दिन कम होना और अतिवृष्टि की घटनाएँ बढ़ना जलवायु परिवर्तन के कई लक्षणों में से एक है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण मानसून में देरी हो रही है। ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव पूरे भारत में दिखाई देना लगा है। पिछले 37 वर्षों के मौसम संबंधी आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि प्रदेश में मानसून करीब 7 से 8 दिन की देरी से आ रहा है। तीन-चार दशक पहले की तरह अक्टूबर में अब अच्छा बारिश नहीं हो रही है। मौसम विभाग भी मानसून के आगमन की तारीख बदल रहा है। ऐसी स्थिति में कृषि योजना के साथ खेती से जुड़ी सारी योजनाओं को नए सिरे से नियोजित करना होगा।

### निष्कर्ष (Conclusion)

वर्षा के दिन कम होना और अतिवृद्धि घटनाएँ बढ़ाना जलवायु परिवर्तन के कई लक्षणों में से एक है। इस प्रकार जलवायु परिवर्तन ने भारतीय मानसून को भी प्रभावित किया है। इस प्रकार भारतीय मानसून के संपूर्ण अध्ययन से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि 2017 में भारतीय मानसून कमजोर रहा और औसत से 5.2% वर्षा की कमी रही है। देश के कई हिस्सों में वर्षा सामान्य से भी कम हो रही है। इस वर्ष वर्षा की असमानता भी अधिक देखी गयी कई भागों में सूखा तो कई भागों में बाढ़ के हालात भी देखे गए।

### संदर्भ सूची (References)

- [1] <http://hindi.mapsofindia.com/my-india/india/climate-change-and-its-impact-on-monsoon-in-india>
- [2] [www.wikipedia.org](http://www.wikipedia.org)
- [3] [www.scientificworld.in](http://www.scientificworld.in)
- [4] <https://www.skymetweather.com/content/weather-news-and-analysis/hindi-accurate-prediction-by-skymet-as-monsoon-ends-with-below-normal-rainfall/>
- [5] <http://hindi.indiawaterportal.org/>
- [6] Savindra Singh: Climatology, Praying Pustak Bhawan, University Road, Allahabad ,
- [7] Suresh Chandra Bansal: Advanced Geography of India, Meenakshi Prakashan, Meerut.

\*Corresponding author.

E-mail address: sharma.chandrakanta11@gmail.com